Sangeet Manthan: Article 2 of N: Diwali-November, 2012

By Dr. Sudha Patwardhan

Send comments and questions to: reflections@vishnudigambarvidyalaya.com

भारतीय संगीत का विश्व संगीत को दिया गया सबसे महत्त्वपूर्ण उपहार है **राग** | समूची संगीत की दुनिया में राग संगीत का सानी कोई नहीं है | सात स्वरों के सप्तक में से चुन चुन कर स्वरों को लेकर अर्थात एक प्रकार से सप्तक को सीमित करके राग का निर्माण होता है और फिर उस सीमित क्षेत्र में अधिकतम विस्तार किया जाता है | कभी कभी सातो स्वर भी लिए जाते हैं | यह पूर्णतया कलाकार की प्रतिभा पर निर्भर करता है कि वह राग का विस्तार किस प्रकार करे | इसीसे एक ही राग को अनेको रीतियों से सजाकर उसे विभिन्न रंगों में पेश किया जाता है| पश्चिमी संगीत में रचनाकार [कम्पोजर] प्रमुख होता है, उस के द्वारा निर्माण की गई रचना को वहाँ के गायक-वादक प्रस्तुत करते हैं | हमारे यहाँ रागों के रचयिता अलग भी होते हैं तथा कलाकार स्वयं भी राग की और बंदिशों की रचना कर सकते हैं | राग की पेशकश करते समय उसे विविध ढंगों से अलंकृत करने की कलाकार को पूरी स्वतंत्रता रहती है| राग का अर्थ है स्वरों एवं वर्णों की ऐसी प्रस्तुति जो श्रोताओं का रंजन करे | स्वर के साथ यहाँ वर्ण शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है - गायन –वादन की क्रिया, अर्थात आरोही-अवरोही या मिले-जुले ढंग से स्वरों की पेशकारी | स्वर वाद्य , जैसे सितार, सरोद, वायलिन, शहनाई, बांसुरी आदि में यह पेशकारी केवल स्वरों द्वारा की जाती है, जब कि कंठ संगीत में ध्रुपदों में या ख्यालों में शब्दों के माध्यम से तथा स्वरों के जरिये गायक पूरे विस्तार के साथ आलाप , बोल तान, तान आदि की सहायता से राग को प्रस्तुत करते हैं | पूर्व काल में भी राग शब्द का प्रयोग हुआ है, जैसे स्वयं भरत मुनि ने भी राग शब्द को प्रयुक्त किया है, किन्तु वहाँ राग से रस या रंजन यह अर्थ निकलता है | ऐसे कोई प्रमाण अब तक नहीं मिले हैं जिनके आधार पर यह तय किया जा सके कि प्राचीन काल में राग शब्द का प्रयोग आज के समान विशिष्ट अर्थ में किया जाता था | महाकवि कालिदास के प्रसिद्द नाटक "अभिज्ञान शाकुंतल "में गीत राग इस शब्द का प्रयोग हुआ है जिससे गीत से उत्पन्न रस ही अभिप्रेत है |

उसके बाद में सर्व प्रथम ७ वीं ८ वीं शती में संगीतज्ञ मतंग मुनि ने राग शब्द का प्रयोग आज कल के प्रचलित अर्थ में किया है | उन्होंने अपने प्रसिद्द ग्रन्थ "बृहद्देशी" में उल्लेख किया है—स्वर-वर्ण विभूषित ,लोगों के चित्त का रंजन करनेवाला ध्वनि विशेष राग कहलाता है | पश्चात् १४ वीं सदी के लगभग हुए पंडित शारंगदेव ने भी अपने ग्रन्थ "संगीत रत्नाकर" में इस प्रका से राग को परिभाषित किया है—स्वर –वर्ण विभूषित एवं लोगों का रंजन करनेवाली स्वर रचना | लक्षणीय तथ्य यह है कि इन दोनों शास्त्रकारों ने ही नहीं,अपितु बाद के भी संगीतज्ञों ने राग को स्वर –वर्णों से युक्त कहने के साथ ही उसमें लोगों का मन रंजन करने की क्षमता का होना अनिवार्य माना है| इसी उद्देश्य को सामने रख कर राग के लिए कुछ नियम भी बनाए गए हैं,जिनमे प्रमुख नियम इस प्रकार से हैं-

१ प्रत्येक राग में षडज का होना आवश्यक है, क्यों कि वह आधार स्वर होने से उसे हटाया जाना संभव नहीं है|
२ राग में कम से कम ५ स्वर होने चाहिए|
३ पंचम एवं मध्यम एक साथ किसी भी राग में वर्जित नहीं होते हैं|
४ दो पास-पास के स्वर कभी वर्जित नहीं किए जाते हैं|

५ सप्तक के पूर्वांग अथवा उत्तरांग के दो स्वर एक साथ वर्जित नहीं होते |
६ एक स्वर के दो रूप राग में लगातार नहीं गाए जाते हैं|
७ राग में वादी,संवादी का होना अनिवार्य है |
८ यदि वादी स्वर पूर्वांग से हों तो संवादी स्वर उत्तरांग से होता है |

रसिक जान जान चुके होंगे कि अधिकांश नियम राग की रस निर्माण करने की क्षमता को बरकरार रखने हेतु बनाए गए हैं| कमसे कम ५ स्वर न होने से राग में पुनरावृत्ति होगी,क्योंकि वे ही ४ स्वर बार-बार लगाने होंगे | पास-पास के दो स्वर , जैसे कि रे ग या म प या ध नी एक साथ वर्जित होने से खाली पन महसूस होगा ,जिससे रस में कमी आएगी | उसी प्रकार पूर्वांग या उत्तरांग के दो स्वर एकसाथ वर्जित होने से भी रस की हानि होगी|एक स्वर के दोनों रूप लगातार आना रसभंग का कारण बन सकता है, किन्तु कुछ रागों में अत्यंत कुशलता पूर्वक ऐसे स्वर लगाकर राग में रस पैदा किया जाता है| राग को स्थापित करने में राग का वादी स्वर बहुत सहायता करता है| उसे बार बार अन्य स्वरों के साथ या उनके आगे,पीछे लगाकर राग का स्वरूप स्पष्ट किया जाता है| वादी यदि राग के पूर्वांग को संवार रहा हों ,तो यही भूमिका संवादी स्वर उत्तरांग में निभाता है |

रसिकवर! आगे **"राग"** के स्वरूप के विषय में कुछ और जानकारी के साथ उपस्थित रहूंगी - "संगीत मंथन" के अगले भाग में-तब तक के लिये नमस्कार |

English Translation:

The most important gift bestowed upon the world by Indian classical music is “Raag”. In entire music world, ‘Raag Sangeet’ stands proudly alone. Raag is created by using select notes from an octave by encompassing the octave and then improvising within the boundaries. Sometimes all seven notes are used. How the Raag is improvised and developed, depends entirely on the artist’s creative spirit. Hence one Raag is interpreted and presented in various delightful renditions. In western music, composer is supreme and his/her compositions are performed and presented by vocalists or intrumentalists. In Indian lassical music, creators of Raag are many times different than the artist or the artist can also create Raag or Bandishes (compositions based on Raagas). The artists have full freedom to improvise, decorate and perform the Raag according to his/her own creativity. Raag is defined as presentation of notes (Swar) and arrangements of the notes (Varna) in an entertaining manner. ‘Varna’ refers to an act of singing or playing an instrument, for example, ascending, descending or similar type of arangement of notes. Musical instruments, such as, Sitar, Sarod, Violin, Shehnai, Bansuri (Flute) only present notes; whereas vocal music also includes Dhrupad, Khyaal and expands them with aalaap, bol taan, taan to present a Raag. In ancient times, Raag was mentioned. For example, Bharat muni (sage) used the word Raag. However, Raag word was used as a synonym to

entertainment or essence. There is no evidence that the word ‘Raag’ was used in the same context as today. Great poet Kalidas used the word ‘Geet Raag’ in the famous play, “Abhidnyaan Shakuntal”, where it can be interpreted as ‘essence of a song’.

After this, in 7th or 8th century, musicologist sage Matanga used the word Raag for the first time in current context. He wrote in his famous book “Bruhaddeshi” – a sound formation that is ornamented with ‘svar’ (musical notes), ‘Varna’ (four basic ways in which musical notes are organised) and is entertaining for people is called ‘Raaga’. Around 14th century, Pandit Sharangadev also wrote about ‘Raaga’ in his book “Sangeet Ratnakar” : A composition that is equipped with ‘Svar’ and ‘Varna’ and entertains people. Hence we conclude that not only these two scholars, but the musicologists that followed, also stipulated that ‘Raaga’ should not only possess ‘Svar’ and ‘Varna’, but it should also have ability to entertain. With this in mind, there are some rules formed about ‘Raaga’. The main rules are as follows:

1. Every ‘Raaga’ must have ‘Shadja’ or ‘Sa’, since it is a base ‘Svar’ and cannot be removed.
2. Every ‘Raaga’ should have at least five notes.
3. Pa (Pancham) and Ma (Madhyam) cannot be ommitted together in any raaga.
4. Two notes (svar) which are next to each other cannot be ommitted in any raaga.
5. Two notes together from first half or second half of the octave cannot be ommtted.
6. Two forms of the same note cannot be used one after the other in a raaga. Examplr: shuddha and komal Ni back to back (basic and soft).
7. Every Raaga has to have vaadi (most important note in a raaga) and saunvaadi (second most important note in a raaga).
8. If vaadi is in the first half of the octave, sauvaadi will be in the second half.

The readers can now understand that most rules are formed to create entertainment through performance of the Raaga. If there are less than five notes, there will be repetition since the four notes will be used again and again. By ommitting consecutive notes, like ReGa or MaPa, there will be major gaps and it will sound odd. Same oddity will occur if two notes from the first or from second half of the octave (purvang and uttaranga) were removed together. Using wo forms of the same notes back to back can sound odd, but some skilled perfromers can use them for a great result. A ‘Vaadi’ note is very helpful in establishing a raaga. It is used again and again with

other notes or before and after other notes to establish a charatcter of the raaga. If vaadi exists in the first half of the octave, saunvaadi fulfills the same role in the second half of the octave.

To the readers – I will return with some more information about the ‘Form of a Raaga’ in the next article of ‘Sangeet Manthan’. Until then, *Namaskar*.